# 8 पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका

**डॉ. संगीता कुमारी नागरवाल[1] एवं डॉ. विजय कुमार[2]***

[1]आचार्य इतिहास, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बांदीकुई।

[2]सह आचार्य ई,ए.एफ.एम, श्री संत सुन्दरदास राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय दौसा।

*Corresponding Author: dr.sangeetanagarwal59@gmail.com

**सार**

पर्यावरण परी+आवरण से मिलकर बना है जिसका अर्थ है हमारे चारों ओर का वह प्राकृतिक और कृत्रिम वातावरण जिसमें जीव–जंतु, पेड़–पौधे, जल, वायु, भूमि आदि शामिल होते हैं। यह वह समग्र प्रणाली है जिसमें सभी जीव और निर्जीव तत्व एक–दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करते हैं।

- वायु (Air): हमारे चारों ओर की गैसों का मिश्रण, जिसमें मुख्य रूप से नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि शामिल हैं।
- जल (Water): नदियाँ, तालाब, समुद्र, वर्षा जल आदि, जो जीवन के लिए आवश्यक है।
- भूमि (Land): मिट्टी, चट्टानें, पर्वत आदि, जो जीवों के रहने और विकास के लिए आधार प्रदान करते हैं।
- जीव (Organisms): सभी जीवित प्राणी जैसे मनुष्य, जानवर, पक्षी, कीड़े, पेड़–पौधे आदि।
- प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources): जैसे खनिज, ऊर्जा स्रोत आदि, जो पर्यावरण का हिस्सा हैं।
- जलवायु (Climate): तापमान, वर्षा, हवा की गति आदि, जो पर्यावरण की विशेषताएँ निर्धारित करते हैं।

ये सभी घटक मिलकर पर्यावरण की समग्रता बनाते हैं और एक–दूसरे पर प्रभाव डालते हैं।

**शब्दकोशः** *वायु, जल, भूमि, जीव, प्राकृतिक संसाधन, जलवायु।*

## प्रस्तावना

### पर्यावरण का महत्व

पर्यावरण हमें सांस लेने के लिए हवा, पीने के लिए पानी और रहने के लिए जमीन प्रदान करता है। यह हमारे जीवन की प्रत्येक क्रिया को प्रभावित करता है। यह सजीवों के विकास और उनकी जीविता (survival) को तय करता है। बोरिंग के अनुसार: ''एक व्यक्ति के परिवेश में वह सब कुछ शामिल है जो उसके जन्म से मृत्यु तक उसे प्रभावित करता है''। सामान्य अर्थः यह हमारे आस–पास के सभी भौतिक, रासायनिक और जैविक कारकों की कुल इकाई है। अब हम बात करते हैं पर्यावरण संरक्षण की पर्यावरण संरक्षण (Environmental Protection) का अर्थ है। प्राकृतिक पर्यावरण—जैसे हवा, पानी, मिट्टी, पेड़–पौधे और वन्यजीवों को प्रदूषण और विनाश से बचाना। यह मानवीय गतिविधियों के कारण पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम करने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए की जाने वाली नीतियां, व्यक्तिगत प्रयास और संरक्षण के उपाय हैं। इसका लक्ष्य भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखना है।

### पर्यावरण संरक्षण के प्रमुख बिंदु

- प्रदूषण नियंत्रण: हवा, पानी और भूमि को प्रदूषित होने से रोकना।
- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षणरू वनों, जल और वन्यजीवों का बुद्धिमानी से उपयोग करना।
- सतत विकास (Sustainable Development): विकास के साथ–साथ पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करना ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधन बचे रहें।
- पुनर्चक्रण और कचरा प्रबंधनरू कचरे को कम करना और संसाधनों को पुनर्चक्रित (Recycle) करना।

### पर्यावरण के लिए हम कैसे योगदान दे सकते हैं?

वृक्षारोपण: अधिक से अधिक पेड़ लगाना। ऊर्जा की बचत: बिजली और जीवाश्म ईंधन का कम उपयोग करना। जल संरक्षण: पानी की बर्बादी रोकना। प्लास्टिक का कम उपयोगरू प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए पुनरू प्रयोज्य (Reusable) वस्तुओं का उपयोग करना। यह न केवल सरकारी जिम्मेदारी है, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करें।

### पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

पर्यावरण संरक्षण पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता, स्वास्थ्य और आने वाली पीढ़ियों के कल्याण के लिए अनिवार्य है। यह जलवायु परिवर्तन को कम करने, प्राकृतिक आपदाओं को रोकने, जैव विविधता को संरक्षित करने और स्वच्छ वायु व पानी सुनिश्चित करने में मदद

ISBN: 978-93-49468-43-6

करता है। यह पारिस्थितिक तंत्र को स्वस्थ रखकर मानव जीवन को गुणवत्तापूर्ण और सतत बनाता है।

**पर्यावरण संरक्षण का महत्व**

पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन: यह वायु, जल, और भूमि के संतुलन को बनाए रखता है, जो जीवन के लिए जरूरी है। जलवायु परिवर्तन का मुकाबला: पेड़–पौधे कार्बन सोखकर ग्लोबल वार्मिंग को कम करते हैं और पृथ्वी को ठंडा रखते हैं। स्वास्थ्य और जीवन की रक्षा: स्वच्छ हवा और पानी से सांस की बीमारियों और अन्य स्वास्थ्य खतरों में कमी आती है, जिससे बेहतर जीवनशैली मिलती है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षणरू यह वनों, वन्यजीवों, नदियों और खनिजों को भविष्य के लिए सुरक्षित रखता है। आर्थिक और सामाजिक स्थिरता: यह सतत विकास को बढ़ावा देता है, जिससे कृषि, पर्यटन और अन्य व्यवसायों के लिए संसाधनों की निरंतरता बनी रहती है।

अब हम बात करते हैं पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका क्या रही है। प्राचीन काल से ही पर्यावरण और महिलाएं परस्पर एक दूसरे से यथार्थ रूप से जुड़े हुए है, इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है। पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं के योगदान को प्राचीन काल से वर्तमान तक कई भागों में विभाजित कर कर देख सकते हैं।

- **सिंधु घाटी सभ्यता** (लगभग 3300–1300 ई.पू.) में महिलाएं प्रकृति–पूजन, प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और स्वच्छता के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। वे मातृदेवी और प्राकृतिक तत्वों की पूजा करती थीं, जो उनके पर्यावरण के प्रति सम्मान को दर्शाता है। सिंधु काल में महिलाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रमुख तरीके: प्राकृतिक तत्वों की पूजाः महिलाएं जल, वृक्ष (विशेषकर पीपल), और मातृदेवी की पूजा करती थीं, जो प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान और उनके संरक्षण की भावना को दर्शाता है। जल और स्वच्छता प्रबंधन: वे सामुदायिक कुओं और जल स्रोतों को स्वच्छ रखने में भूमिका निभाती थीं। प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोगरू घरों में मिट्टी के बर्तनों (clay figures) का व्यापक उपयोग और कबाड़ के सही निपटान के साक्ष्य बताते हैं कि वे पर्यावरण के अनुकूल जीवनशैली जीती थीं। कृषि और वनस्पति से जुड़ावरू महिलाएं फसलों की कटाई और कटाई के बाद की गतिविधियों में भाग लेती थीं, जो स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ाव को दर्शाता है। अध्ययन के अनुसार यह सभ्यता पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का अद्वितीय उदाहरण पेश करती है, जिसमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर रहने की परंपरा थी।
- **वैदिक काल** – में महिलाएँ पर्यावरण संरक्षण की अभिन्न अंग थीं। वे घर और समाज का प्रबंधन करते हुए प्रकृति को अत्यंत सम्मान देती थीं। उनकी भूमिका मुख्य रूप

ISBN: 978-93-49468-43-6

से दैनिक जीवन के कार्यों, धार्मिक अनुष्ठानों और प्रकृति की पूजा के माध्यम से प्रकट होती थी पेड़–पौधों की पूजारू स्त्रियां वट, शमी, नीम, बेल आदि वृक्षों की पूजा करती थीं, जो उनके संरक्षण (Conservation) का प्रतीक था। वे अरण्यानी (जंगलों की रानी) की पूजा कर वनों का सम्मान करती थीं। जल संरक्षणरू नदियाँ, तालाब और कुएं भारतीय संस्कृति का हिस्सा थे, और महिलाएं जल की शुद्धता बनाए रखने के लिए जागरूक थीं। कृषि और पशुपालनरू ऋग्वैदिक काल में महिलाएं खेती और गाय–पालन में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। वे घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए घरेलू बगीचे (kitchen garden) की देखभाल करती थीं। दैनिक जीवन में पर्यावरणरू वे घर की साफ–सफाई, गोबर से लीपने और प्राकृतिक संसाधनों का सीमित उपयोग करने के माध्यम से संतुलन बनाए रखती थीं। धार्मिक अनुष्ठानों में भूमिकारू वेदों के अनुसार महिलाएं यज्ञ, हवन और पूजा–पाठ में भाग लेती थीं, जो अक्सर प्रकृति और पर्यावरण को प्रसन्न करने के लिए किए जाते थे। संक्षेप में, वैदिक काल में महिलाओं ने प्रकृति को देवी–देवता मानकर, उनके साथ तालमेल बिठाकर और दैनिक कार्यों में सचेत रहकर पर्यावरण की रक्षा की।

- **मौर्य काल** (लगभग 322–185 ईसा पूर्व) – में पर्यावरण संरक्षण राज्य की नीति और आम जनता के जीवन का एक अभिन्न अंग था। इस युग में, महिलाओं ने घर और समाज दोनों स्तरों पर पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। पेड़–पौधों की रक्षा और पूजारू भारतीय संस्कृति में वैदिक काल से ही महिलाओं का प्रकृति के साथ गहरा जुड़ाव रहा है। मौर्य काल में भी महिलाएं तुलसी, पीपल, वट वृक्ष, और शमी जैसे पवित्र वृक्षों की पूजा करती थीं। इन वृक्षों को संरक्षित करना उनके दैनिक जीवन और धर्म का हिस्सा था, जो जैव विविधता संरक्षण का एक अनूठा तरीका था। प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन: ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में, महिलाएं घर की जरूरतों के लिए पानी और ईंधन (लकड़ी) सीधे प्रकृति से एकत्र करती थीं। वे इन संसाधनों के प्रबंधन में मुख्य भूमिका निभाती थीं और उनका टिकाऊ उपयोग सुनिश्चित करती थीं। पारंपरिक ज्ञान का हस्तांतरण: महिलाएं स्थानीय जैव विविधता की संरक्षक (custodian) थीं। वे औषधीय पौधों, बीजों के संरक्षण और कृषि में उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रजातियों के बारे में पारंपरिक ज्ञान रखती थीं और इस ज्ञान को अगली पीढ़ी को सौंपती थीं। जल संरक्षण और स्वच्छता: कौटिल्य के अर्थशास्त्र (जो मौर्य काल का प्रमुख ग्रंथ है) में भी संसाधनों के संरक्षण पर जोर दिया गया है। महिलाएं जल निकायों (नदियों, तालाबों) के पास सफाई बनाए रखने और उन्हें प्रदूषित न करने की परंपरा का पालन करती थीं। कृषि में भूमिका: महिलाएं खेतों में बीज बोने और उनकी देखभाल करने में भाग लेती थीं, जो कृषि जैव विविधता के संरक्षण में एक प्रमुख योगदान था। यद्यपि मौर्य काल के विशिष्ट ऐतिहासिक

ISBN: 978-93-49468-43-6

दस्तावेजों में व्यक्तिगत महिलाओं के नाम के रूप में बहुत कम जानकारी मिलती है, लेकिन उस समय के समाज में महिलाओं की भागीदारी पर्यावरण के साथ एक सह–अस्तित्वपूर्ण संबंध (co-existence) को दर्शाती है, जो कि पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने का एक आधारभूत कारक था।

- **गुप्त काल** को भारतीय इतिहास का "स्वर्ण युग" कहा जाता है। इस समय न केवल कला और साहित्य में प्रगति हुई, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय चेतना का भी विस्तार हुआ। पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में थारू. पारंपरिक ज्ञान और संसाधन प्रबंधन– प्रबंधक की भूमिकारू महिलाएँ जल, वन और ऊर्जा जैसे प्राकृतिक संसाधनों की मुख्य उपभोक्ता और प्रबंधक दोनों थीं। निर्भरता और सक्रियतारू दैनिक आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर सीधी निर्भरता के कारण, उन्होंने इनके संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाई। धार्मिक और सांस्कृतिक आस्थाएँ– वृक्ष पूजा: पर्यावरण की रक्षा को अक्सर धार्मिक अनुष्ठानों से जोड़ा जाता था। महिलाएँ वट (बरगद), शमी, नीम, बेल और पीपल जैसे पेड़ों की पूजा करती थीं। जैव विविधतारू यह धार्मिक अभ्यास अनजाने में ही सही, लेकिन वैज्ञानिक रूप से जैव विविधता (Biodiversity) को संरक्षित करने का एक सशक्त माध्यम था। घरेलू प्रबंधन– संसाधनों का मितव्ययिता (कम खर्चीला) से उपयोग करना और घर के स्तर पर प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखना महिलाओं की दिनचर्या का हिस्सा था। मुख्यरू गुप्त काल में महिलाओं का प्रकृति के साथ गहरा आध्यात्मिक और व्यावहारिक संबंध था, जिसने उस युग के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में मदद की।
- **मध्यकाल** (लगभग 13वीं–18वीं शताब्दी)– में पर्यावरण संरक्षण मुख्य रूप से सामुदायिक जीवन, धार्मिक विश्वासों और दैनिक आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ था, जिसमें महिलाओं ने केंद्रीय भूमिका निभाई। यद्यपि उस समय के साहित्य में उनके योगदान का उल्लेख कम मिलता है, लेकिन ग्रामीण और जनजातीय समाजों में वे प्राकृतिक संसाधनों की प्राथमिक संरक्षक थीं। मध्यकाल में पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं: **बिश्नोई आंदोलन** (1731): यह मध्यकाल का सबसे बड़ा और सबसे प्रसिद्ध महिला–नेतृत्व वाला पर्यावरण संरक्षण आंदोलन था। राजस्थान के खेजड़ली गाँव में अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 लोगों ने, जिनमें अधिकांश महिलाएँ थीं, खेजड़ी के पेड़ों को बचाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। संसाधनों का प्रबंधन: चूँकि ग्रामीण महिलाएँ ईंधन, चारा, जल और भोजन जुटाने की मुख्य जिम्मेदार थीं, वे जानती थीं कि संसाधनों का अति–दोहन न हो। वे वनों और जल स्रोतों के टिकाऊ प्रबंधन में लगी रहती थीं। धार्मिक और सांस्कृतिक संरक्षणरू महिलाएँ दैनिक पूजा और अनुष्ठानों के माध्यम से

प्रकृति की रक्षा करती थीं। बरगद (वट सावित्री), तुलसी, पीपल, नीम और शमी जैसे पेड़ों की पूजा करने की परंपरा ने उन वृक्षों के संरक्षण में मदद की। जल संरक्षणरू ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों, कुओं और बावड़ियों की साफ–सफाई और उनकी पूजा करने की परंपरा में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिससे जल स्रोतों की सुरक्षा सुनिश्चित होती थी। पारंपरिक ज्ञान: महिलाओं को जड़ी–बूटियों, स्थानीय वनस्पतियों और कृषि से जुड़ी गहरी समझ थी, जिससे वे जैव विविधता के संरक्षण में योगदान देती थीं। निष्कर्षः मध्यकाल में, जब औपचारिक पर्यावरण संरक्षण नीतियां नहीं थीं, महिलाओं ने परंपरा, संस्कृति और जीवन यापन के माध्यम से पर्यावरण संतुलन को बनाए रखा। बिश्नोई आंदोलन जैसी घटनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि उन्होंने पेड़ों की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने में भी संकोच नहीं किया।

- **ब्रिटिश भारत** (1757–1947)– में महिलाओं ने न केवल सामाजिक और राजनीतिक रूप से, बल्कि पर्यावरण के संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाई थी। चूँकि इस काल में औपनिवेशिक शासन के तहत वनों का व्यावसायिक दोहन बढ़ रहा था, ऐसे में ग्रामीण महिलाओं ने अपनी आजीविका और प्रकृति के संतुलन को बचाने के लिए कड़े संघर्ष किए। यहाँ ब्रिटिश भारत के दौरान पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं के योगदान के प्रमुख पहलू दिए गए हैं: **चिपको आंदोलन** – (औपनिवेशिक काल का संघर्ष): भारत में महिलाओं द्वारा वनों की रक्षा के लिए 'चिपको आंदोलन' का ताना–बाना ब्रिटिश काल में ही बुना गया था, जो बाद में 1970 के दशक में मुखर हुआ। यह आंदोलन उस समय की व्यावसायिक वन कटाई के खिलाफ स्थानीय महिलाओं के संघर्ष से शुरू हुआ। महिलाएं सबसे आगे रही चूँकि वन विनाश का सबसे बुरा असर महिलाओं की दैनिक आजीविका (ईंधन, चारा) पर पड़ता था, इसलिए गौरा देवी, सुदेशा देवी, बचनी देवी जैसी महिलाओं ने वनों को कटने से बचाने के लिए 'पेड़ों को गले लगाने' (चिपको) की रणनीति अपनाई। वन नीलामी का विरोध: 1970 के दशक के उत्तरार्ध में, जब ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के प्रभाव में वनों की नीलामी हो रही थी, पार्वती देवी और जीवंती देवी जैसी महिलाओं ने विरोध किया और वन नीलामी को रोकने में सफल रहीं।

## सांस्कृतिक और पारंपरिक संरक्षण

ग्रामीण भारतीय महिलाएं सदियों से प्रकृति के प्रति सजग रही हैं। वृक्ष और जल पूजा: महिलाएं पारंपरिक रूप से वट वृक्ष, नीम, जल स्रोतों (नदी, तालाब) की पूजा करती आई हैं, जो उनके द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने का एक तरीका था। पारंपरिक ज्ञान: महिलाएं बीज संरक्षक के रूप में स्थानीय जैव विविधता (biodiversity) को बचाती थीं, जो सतत कृषि का एक हिस्सा था। महिला और पर्यावरण का अटूट संबंध: ब्रिटिश भारत में

ISBN: 978-93-49468-43-6

महिलाओं ने यह स्थापित किया कि पर्यावरण संरक्षण मानव अस्तित्व के लिए कितना महत्वपूर्ण है। उनकी सक्रियता ने दिखाया कि वे केवल पर्यावरण के उपभोक्ता नहीं, बल्कि उसके संरक्षक (Custodians) भी हैं। संक्षेप में, ब्रिटिश भारत में महिलाओं का योगदान मुख्य रूप से जमीनी स्तर पर प्रत्यक्ष कार्रवाई, पारंपरिक संरक्षण और आजीविका की सुरक्षा के लिए संघर्ष के रूप में था। उन्होंने यह साबित कर दिया कि जब तक प्रकृति सुरक्षित है, तभी तक मानव जीवन सुरक्षित है।

**आधुनिक भारत में पर्यावरण संरक्षण** में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण, बहुआयामी और परिवर्तनकारी रही है। वे केवल प्राकृतिक संसाधनों की उपभोक्ता नहीं, बल्कि उनकी मुख्य संरक्षक और प्रबंधक भी हैं। पारंपरिक ज्ञान से लेकर आधुनिक सक्रियता तक, महिलाएं सतत विकास (Sustainable Development) की नींव रख रही हैं आधुनिक भारत में पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं के योगदान के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं

- **ऐतिहासिक और जमीनी आंदोलनों में नेतृत्व रक्षासूत्र आंदोलन (1994):** टिहरी की महिलाओं ने पेड़ों को रक्षासूत्र बांधकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया। नर्मदा बचाओ आंदोलन: मेधा पाटकर जैसी महिलाओं ने विस्थापन और पारिस्थितिक विनाश के खिलाफ लंबा संघर्ष किया।
- **प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन** (Management of Natural Resources) **:**ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं जल, ईंधन और चारे जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए सीधे प्रकृति पर निर्भर हैं, इसलिए वे संसाधनों के सतत उपयोग (Sustainable Use) के प्रति अधिक जागरूक हैं। वे सामुदायिक वनों, बीज संरक्षण और जल संचयन प्रणालियों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- **सतत जीवनशैली और पर्यावरण जागरूकता** (Sustainable Lifestyle) : महिलाएं घर–घर में पर्यावरण के प्रति सम्मान का संदेश पहुंचाती हैं। नीम, तुलसी, पीपल जैसे वृक्षों की पूजा और देखभाल पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही है।दैनिक जीवन में प्लास्टिक का कम उपयोग, पुनर्चक्रण (Recycling), और अपशिष्ट प्रबंधन (Waste Management) में महिलाएं जागरूक भूमिका निभा रही हैं ।
- **शिक्षा, जागरूकता और नीति निर्माण** –पर्यावरण शिक्षा: महिलाएं बच्चों और समुदाय को पर्यावरण के महत्व के बारे में शिक्षित कर रही हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियां जागरूक हो रही हैं। ,नीति निर्धारण में भूमिका: अब अधिक से अधिक महिलाएं पर्यावरण वैज्ञानिक, नीति निर्माता और कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही हैं, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण नीतियां (जैसे पेरिस समझौता) बनाने में मदद करती हैं।

ISBN: 978-93-49468-43-6

- **कृषि और जैव विविधता संरक्षण** –पारंपरिक बीज संरक्षण: महिलाएं जैव विविधता को बचाए रखने के लिए पारंपरिक बीजों का संरक्षण कर रही हैं। सतत कृषि: महिला किसान जैविक खेती और मृदा संरक्षण को अपनाकर कृषि को अधिक टिकाऊ बना रही हैं।
- **आधुनिक सक्रियता और नीतियां** (Modern Activism and Policy): पर्यावरण कार्यकर्ताः वंदना शिवा (जैव विविधता), सुनीता नारायण (नीति व संरक्षण), मेनका गांधी (पशु कल्याण), और समैरा अब्दुलअली (शोर प्रदूषण) जैसी महिलाएं आधुनिक भारत में प्रमुख आवाजें हैं।
- **निर्णय लेने में भूमिका: स्थानीय शासन (पंचायती राज)**: में महिलाओं की भागीदारी से जल प्रबंधन और स्वच्छता में सुधार हुआ है। हरित अर्थव्यवस्था: महिलाएं सौर ऊर्जा, ईको–टूरिज्म और जैविक खेती जैसे क्षेत्रों में सक्रिय होकर ''हरित अर्थव्यवस्था'' (Green Economy) को बढ़ावा दे रही हैं। निष्कर्ष आधुनिक भारत में महिलाएं न केवल पर्यावरण विनाश के प्रभावों से सबसे अधिक प्रभावित होती हैं, बल्कि वे समाधान का हिस्सा भी हैं। वे न केवल प्रकृति की रक्षा कर रही हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सतत भविष्य का निर्माण कर रही हैं। उन्हें सशक्त बनाकर ही वास्तव में पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता। इसी क्रम में छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में अहम कदम उठाया गया है। बस्तर जहाँ प्रकृति की सौंदर्यता झलकती है, वहाँ की खूबसूरती देखने हजारों पर्यटक उमड़ पड़ते हैं। वहाँ के स्थलों को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए जिला प्रशासन की पहल पर पर्यटन समिति की महिलाओं व स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा कागज के थैले बनाए जा रहे हैं साथ ही वहाँ आने वाले पर्यटकों को भी इसके उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले में प्रत्येक वर्ष राज्य के निर्माण के उत्सव के रूप में पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु छात्र छात्राओं द्वारा स्टॉल लगाकर लोगों को जागरूक किया जाता है। वर्ष 2022 के राज्योत्सव में स्टॉल के प्रवेश द्वार पर आकर्षक ढंग से लोगों को सिंगलयूज प्लास्टिक पर 1 जुलाई 2022 से प्रतिबंध को दर्शाकर जागरूक किया गया। जिसमें छात्रों द्वारा इस पहल में महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसी तरह छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर बनाने हेतु जलवायु से संबंधित समस्याओं के निपटान के लिए आर्द्रभूमि संरक्षण कार्यक्रम चलाया गया। जिसके लिए वन व जलवायु परिवर्तन विभाग द्वारा ग्रीन क्लब एवं कलिंगा विश्वविद्यालय के सहयोग से जन जागरूकता का कार्यक्रम चलाया गया। जिसके तहत 2 फरवरी को विश्व आर्द्र भूमि दिवस के अवसर पर लोगों को विश्वविद्यालय व स्कूली छात्रों ने सफाई अभियान चलाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इसके

ISBN: 978-93-49468-43-6

अंतर्गत उन्होंने 285 किलोग्राम कचरा इकट्ठा कर नगर पालिकाओं को उचित निपटान हेतु सौंपा। छत्तीसगढ़ में कुल 35 वेटलैंड है। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा 2023 में विश्व भूमि दिवस के अवसर पर यह वाक्य "आद्रभूमि बहाली" दिया गया। इसके अंतर्गत पर्यावरण की स्थिरता को बनाए रखाजा सके एवं आर्द्र भूमि को पारिस्थितिक तथा स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त हो, यह सुनिश्चित किया जा सके, का कार्यक्रम चलाया गया।

## पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों की जागरूकता

भारत में पर्यावरणीय आन्दोलन एवं महिला नेतृत्व'' पर अपने निर्देशक के मार्गदर्शन व अपने गहन अध्ययन तथा विश्लेषनात्मक दृष्टिकोणों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति महिलाओं की भागीदारी व उनके द्वारा सम्पूर्ण भारत को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने की भूमिका को समकालीन समाज से जोड़े जाने का प्रयास है। लेकिन इसके अतिरिक्त अध्ययन के उद्देश्य के रूप में पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता की आवष्यकता है जिसे निम्न प्रकार से उल्लेखित किया गया है:–

इस अध्ययन का एकमात्र उद्देश्य है हमारा पर्यावरण के संदर्भ में महिलाओं की भूमिका को बताकर 1. पर्यावरण के विभिन्न घटको का मानव क्रिया–कलापों पर प्रभाव से लोगों को अवगत कराना है। 2. पर्यावरण के प्रति जन–चेतना जागृत करना तथा इसके प्रति अवबोध विकसित करना। 3. पर्यावरण संरक्षण हेतु उर्वरकों व किटनाषकों के प्रयोग को कम करना। बिजली, पानी, गैस का कम से कम उपयोग करना। 4. पर्यावरण व वन्य जीव रक्षा के पुनीत कार्यो में महिलाओं की सक्रियता से बदलाव को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना। 5. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में सर्वप्रथम पर्यावरण संरक्षण के लिए अमृता देवी द्वारा किए गए कार्यों की वर्तमान में महत्ता बताकर युवापीढ़ी को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का बोध कराना। 6. भारत में सुरक्षित पर्यावरण के लिए महिलाओं द्वारा किए गए विभिन्न आन्दोलनों की समकालीन समाज में प्रांसगिकता को उल्लेखित करना। 7. वैश्विक स्तर पर वंगारी मथाई द्वारा चलाए गए ''ग्रीन बेल्ट आन्दोलन'' की महता के आधार पर 21वीं सदी के विश्व को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना। 8. सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण के कार्यों मे लोगों को योगदान देना आवश्यक है जैसे कि घर के कचरे को सही तरीके से अलग कर, वृक्षारोपण कर, जैविक पदार्थों का उपयोग कर, जल का उचित उपयोग कर, प्लास्टिक का कम से कम उपयोग कर मानव अपना सहयोग दे सकते हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गर्ग, बी.एल. (2003). पर्यावरण प्रकृति और मानव, शब्द साधना, अजमेर, प्रथम संस्करण। विश्व स्तर पर ग्रेटा थुनबर्ग (Greta Thunberg) जैसी युवा कार्यकर्ता और भारत में सुनीता नारायण, वंदना शिवा जैसी हस्तियां नीतिगत बदलावों के लिए मुखर होकर लड़ रही हैं।

2. ओझा, डी.डी. (1999). पर्यावरण अवबोध, पवन कुमार शर्मा, साईन्टिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर.

3. चातक, गोविन्द (1991). पर्यावरण और संस्कृति का संकट, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण,

4. सक्सेना,एच.एम. (1994). पर्यावरण तथा परिस्थितिकी भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.

5. साहू, डॉ. बनवारी लाल (1997). पर्यावरण संरक्षण एवं खेजड़ी बलिदान, बोधि प्रकाशन जयपुर 302015 द्वारा प्रकाशित.

6. सिंह, राजीव कुमार, (2009). पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर.

7. यादव, वीरेन्द्र सिंह, (2010). 21वीं सदी का पर्यावरवण आन्दोलन: चिन्तन के विविध आयाम, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.

8. सक्सेना, एच.एम.,(2009). पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर.

9. शर्मा, डॉ. मालती (2011). पर्यावरण अध्ययन, शिवांक प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण।

ISBN: 978-93-49468-43-6